# "वाचक यशोविजयरचित समुद्र–वहाण संवाद"
# [ कर्तानी स्वहस्तलिखित प्रति(खरडा)ना आधारे पाठ–संशोधन ]

– मुनि शीलचन्द्रविजय

मध्यकालीन साहित्य, विशेषतः जैन साहित्य 'संवाद' प्रकारनी अनेक रचनाओथी समृद्ध छे. १७–१८ मा शतकना समर्थ जैन ग्रन्थकार उपाध्याय श्रीयशोविजयजीए पण, वि.सं. १७१७ मां, दरियाकिनारे आवेला घोघा बंदरे पोताना चातुर्मास दरमियान "समुद्र–वहाण संवाद" नामे एक स–रस कृति रची छे. आ कृति ई.स. १९३६मां प्रकाशित "गुर्जर साहित्य संग्रह –प्रथम विभाग "मां श्री मोहनलाल दलीचंद देसाईए संपादित करीने मुद्रित करावी छे. तेमां प्रान्ते जोवा मळती नोंध प्रमाणे ते संपादन 'खेडा भंडार' नी प्रतिना आधारे थयानुं जणाय छे.

ताजेतरमां ज आ कृतिनी कर्ताए स्वहस्ते आद्य खरडा (Draft) रूपे लखेली प्रति जोवामां आवतां तेना तथा मुद्रितना पाठो मेळववानुं मन थयुं. भाषानी रीते तो घणावधा भेदो छे ज, जे माटे अवसरे आ कृतिने तेना कर्तानी ज भाषामां प्रकाशित करवा जोग गणाय; परंतु पाठोनी दृष्टिए पण केटलाक तफावतो नजरमां आवतां ते तफावतो अहीं रजू कर्या छे.

| | पंक्ति | मुद्रित | प्रति |
|---|---|---|---|
| (१) दूहा : | ४–१ | एहने | एहोनइं |
| | ४–२ | मांहो मांहे | माहोमाहिं |
| | ४–३ | थइ | हुइ |

**ढाल १ नुं मुखडुं – मु. फागनी; – थाहरां मोहलां उपर मेह झरोखें वीजळी रे के वीजळी ए देशी. ।। प्रतिमां–त्रिभुवन तारण तीरथ पास चिंतामणी रे २ ए देशी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ढाल १ : | ३–३ | तूरहि वाजे | तूर दिवाजइ |
| | ४–४ | सुर बहू रे | सुरवहू रे |
| | ५–२ | साह्य | साइं |
| | ६–२ | तिणें | तणइं |
| | ७–२ | गर्वे चढावे पर्वत | गर्व चडावइ पर्वति |
| | ७–३ | पर–कह्यो | पर–कहिया |
| | ७–४ | ग्रह्यो | ग्रह्या |



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| | | | |
|---|---|---|---|
| (२) दूहा : | ३–४ | जाणे | जाणो |
| ढाल २ : | | देशीनुं सूचक पद प्रतिमां छे नहि. | |
| | १–३ | मोटाई रे | मोटाई छइ रे |
| | १–४ | समृद्धि | समृद्ध |
| | २–२ | दीप जिहां | दीपइ जिहां |
| | ३–२ | जातिफल | जातीफल |
| | ४–२ | मचकुंद | मुचुकुंद |
| | ४–४ | कंद | कुंद |
| | ५–२ | साची | शुचि |
| | ५–३ | ०कारणे | ०कारण |
| | ५–४ | लाभंत | तेजंत |
| | ६–१ | बले | बलिइं |
| | ९–१ | मुजथी | तुझथी |
| | ९–४ | मति | मत |
| (३) ढाल ३ : | २–३ | वाध्याजी | वाधीरे |
| | २–४ | साध्याजी | साधीरे |
| | ३–१ | मोटाई | मोटाईइं |
| | १–४ | लोग लोगाईजी | लोक नइं लोई रे =(मार्जिनमां स्वहस्ते 'लुगाई' लख्युं छे. |
| | ८–१ | वहरोजी | चहरोजी |
| | ९–२ | गोख्युंजी | घोष्युंजी |
| | १०–३ | बहियो० | वहयो० |
| (४) ढाल ४ : | ७–१ | कुल श्यो | कुलनो श्यो |
| (५) ढाल ६: | | आंकणी पछी "जे जाचिकने धन छेतरे लो" – ए पंक्ति प्रतिमां नथी. | |
| | २–१ | छे नहि | छतइ |
| | २–३ | भारणी | भारिणी |
| | ४–१ | मच्छादि | माछादिक |



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ४–२ | ज्युं | जिम |
| | ५–३ | कृषि | कूषि |
| | ९–२ | गोप्यो | गोख्यो |
| (६) दूहा : | १–३ | मले | मलइं |
| ढाल ७ : | २–१ | उत्पति तिम | ऊपति मनि |
| | २–५ | सहुं हुं छुं | सहूं छुं हूं |
| | ३–३ | जलहरे | जल हरइं |
| | ३–६ | पुण्य भव० | पुण्य ए भव० |
| | ४–२ | देखता | देखतो |
| | ४–५ | वीचि खंपे | वीचि पंखइं |
| | ५–३ | ठामनो | ठामना |
| | ६–४ | दाधे | दाधी |
| | ७–५ | धननूं | घननुं |
| | ८–१ | वृष्टि रे | वृष्टिं रे |
| | ८–२ | दृष्टि रे | दृष्टिं रे |
| | ८–३ | दृष्टि | दृष्टिं |
| (७) दूहा : | ५–४ | माननी | मानिनि |
| | ७–१ | साथ तूं | साचलुं |
| | ७–४ | वृंद | बिंदु |
| ढाल ८ : | २–१ | उव संगी रे | उचसंगी रे |
| | ७–१ | रहे | रहतइ |
| (८) दूहा : | २–१ | सणाजा जातिनो | सणीजा नातिनो |
| | ३–२ | जे पणि | पणि जे |
| | ५–४ | दिवसे | दिवस |
| (९) दूहा : | ४–२ | निश्रूक | निशूक |
| ढाल १० : | २–३ | सरमोहता | सरडोहता |
| | ४–४ | ऊधांण वलियां | ऊधाण बलियां |
| | ६–३ | मेळवी | भेळवी |
| | ७–१ | निशितशिर धार | निशितशर धुर |



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ११–१ | उसरी | ओसरी |
| | ११–३ | खालतो बाळतो | बालतो गालतो |
| | १३–१ | फेरवे | फोरवइ |
| (१०) दूहा : | १–४ | भोग | योग |
| | २–२ | कृष | कूखि |
| | ३–३ | भचके | भकइ |
| ढाल ११ : | ५–२ | नीति ऋजुमार्ग तें | नीतिमार्ग ते तिं |
| | ६–३ | सबल | सयल |
| | ७–१ | झकोले | छकोलइ |
| | ८–१ | पाडीन | पाठीन |
| | ९–३ | बोले | बोली |
| (११) ढाल १२ : | ४–३ | लइ | लहइ |
| | ३–३ | रूसो परि | रूसो पर |
| | ५–१ | शोकनी परि नीत | शाकिनि परि निति |
| | ८–४ | ऊगरस्यै तो पंक | ऊगरस्यइ पंक |
| | १०–१ | वृथा | यथा |
| | १२–१ | पिटि | पिट्टि |
| (१२) दूहा : | २–२ | विंध्य | वंध्य |
| | २–३ | विंध्याचल | वंध्याचल |
| | ३–३ | वनने कुंज | वननिकुंज |
| ढाल १३ : | | भोलिडा रे हंसा रे | भोलूडा रे हंसा |
| | ४–३ | देखो | देखां |
| | १०–१ | ते उत्पत्ति रे | ते उत्पातिं रे |
| (१३) दूहा : | १–४ | तालक्ख | नालक्ख |
| | २–४ | मूकने | मुंझइ |
| | ३–४ | करे सागरस्युं | करि समुद्रस्युं |
| ढाल १४ : | ९–३ | फिरिअ पाओ | फिरि नींपाउं |



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| | | | |
|---|---|---|---|
| (१४) दूहा : | ४–३ | सवलो | सघलो |
| ढाल १६ : | १–३ | वाहणथी | वाहणनी |
| | ३–३ | फिरत्त अंबर | अंबर फिरत्त |
| | ४–३ | फिरती | कीरति |
| | ११–१ | पवनहींथे | पवनहीं थई |
| | १२–३ | प्रतिमां – "मानुं व्यवहारीतणां हो" एवो पाठ लखेल छे, पछी पोते ज मार्जिनमां "मानुं जिहाजना लोकना हो" एम उमेर्युं छे. | |
| | | चोपाइ | चोपइ |
| | २–१ | तिहां सोहे | सोहइ तिहां |
| | ३–२ | मावुं | मानुं |
| | १०–१ | केसर छवि अनि | केसर छवि अगनि |
| | १४–३ | वसाणां | वसाणे |
| (१५) ढाल १७: | ४–४ | केसर वचि | केसर छवि |
| | ५–४ | हरख न माइ | न हरख माइ |
| | ९–२ | कर्यां | धरिया |
| | १०–२ | मेहलि | मेल्ही |
| | ११–१ | वाज्यां वाजां | वाजां वागां |
| | १३–३ | हुआं वधामणां | हुआं हो वधामणां |
| | १५–२ | आंगी | अंगी |
| | १५–४ | वळिक कलस. | वली कनक कलस |
| | १९–१ | विधु मुनि संवत | "मुनि "विधु संवत |
| | १९–३ | पहेलां "कवि जसविजयइ ए रच्यो" एम लखेल छे, पछी स्वयं मार्जिनमां "घोघा बंदिरि ए रच्यो" उमेर्युं छे. | |

नोंध :– मुद्रित प्रतिमां दरेक ढालना मथाले अलग अलग "देशी"नी पंक्ति छे. ज्यारे कर्तानी प्रतिमां ढाल १, ६ (मात्र "ढाल लो नी" एटलुं ज), ७, ९, १३, १४ (मात्र "**समरिओ साद दिइं ए देव ए देसी**" एटलुं ज), १५, १६, १७ (मात्र "**गछपति राजिओ हो लाल**" एटलुं ज), ए नव ढालोमां ज ते जोवा मळे छे.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# पुरवणीरूप नोंध

"समुद्र वहाण संवाद" नो रसास्वाद करावतां तथा तेनी विविध रचनाखूबीने चर्चतां लेखो पूर्वे लखाया ज छे. कर्तानी अनुवाद – कुशलता प्रत्ये पण अभ्यासीओनुं ध्यान गयेलुं छे, छतां प्रस्तुत नोंधमां उपाध्याय यशोविजयजीनी अनुवादनिपुणतानां केटलांक वधु उदाहरणो समुद्र वहाण संवादमां जडी आवे छे, तेने रजू करवानी लालच रोकी शकाती नथी. संस्कृत–प्राकृत सुभाषितो तथा लोकोक्तिओ – कहेवतोनो उचित रीते अने लाघवपूर्ण शैलीमां विनियोग करवानी उपाध्यायजीनी क्षमता साचे ज अनुपम छे.

**विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम् ।**<br>
**नहि वन्ध्या विजानाति, गुर्वीं प्रसववेदनाम् ।।**

आ सुभाषितनो विनियोग तेमणे आ रीते कर्यो छे :

**"वांझि न जाणइ रे वेदना, जे हुइ प्रसवतां पुत्र;**<br>
**मूढ न जाणइ परिश्रम, जे हुइ भणतां सूत्र (ढाल २/१०)**

तो ९मी ढालना चोथा दूहाना उत्तरार्धमां – अने वस्तुतः ते दूहामां ज–

**"जिम विद्या पुस्तक रही, जिम वलि धन पर–हत्थ"**<br>
– अहीं **"पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं धनम्"**<br>
**(कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या न तद्धनम् ।।)**

आ सुभाषितनो भाव तेमणे सरस रीते गूंथी दीधो छे.<br>
जैन दार्शनिक ग्रंथोमां एक प्राकृत सूक्ति आवे छे :–

**रूसऊ वा परो वा मा, विसं वा परियत्तऊ ।**<br>
**भासियव्वा हिया भासा, सपक्खगुणकारिया ।।**

आनो भाव उपाडीने उपाध्यायजी कहे छे :–

**"निज हित जाणी बोलिइं नवि शास्त्रविरुध;**<br>
**रूसो पर वलि विष भखो, पणि कहिइं शुद्ध ।। (ढाल १२/३)**

**"हरख नहीं वइभव लह्यइ, संकटि दुख न लगार;**<br>
**रणसंग्रामिं धीर जे, ते विरला संसारि"** (ढाल १६ ना दूहा–३)

आमां – **सम्पदि यस्य न हर्षो**



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विपदि विषादो रणे च धीरत्वम् ।
तं भुवनत्रयतिलकं
जनयति जननी सुतं विरलम् ॥

आ सुभाषितना तात्पर्यने केटली खूबीथी वणी लेवामां आव्युं छे ! "आवश्यक – निर्युक्ति" मां एक गाथा आवे छे, तेमां "तीर्थ"नी व्याख्या बांधवामां आवी छे :–

"दाहोवसमं तण्हाइछेअणं मलपवाहणं चेव ।
तिहिं अत्थेहि निउत्तं तम्हा तं दव्वओ तित्थं ॥

हवे आ ज वात जरा जुदी रीते, "महाभारत" मां पण करवामां आवी छे. –(दुर्भाग्ये, महाभारतना सन्दर्भस्थाननुं अत्यारे विस्मरण थयुं छे. पण ते पद्य आ प्रमाणे छे :) –

पङ्क–दाह–पिपासाना – मपहारं करोति यत् ।
तद्धर्मसाधनं तथ्यं तीर्थमित्युच्यते बुधैः ॥

अने आ वातने उपाध्यायजीए आ रीते ढाळी छे :

"टालइ दाह, तृषा हरइ, मल गालइ जे सोइ;
त्रिहुं अरथे तीरथ कहिउं, (ते तुझमां नहिं कोई). (ढाल ७ ना दूहा –६)

अने हवे थोडीक कहेवतो – लोकोक्तिओ पण जोईए :

"खंड भलो चंदन तणो रे लो, स्यो लाकडनो भार रे
सज्जन संग घडी भली रे लो, स्यो मूरख अवतार रे" (ढाल ६/८)

आ वांचता ज – "चंदन की चटकी भली, झाझां काष्ठनां भारा;
चतुरकी घडी भली, मूरखनां जन्मारा" –

ए लोकोक्ति सहेजे ज याद आवी जाय.
अने एमनी आ उक्तिओ –

" मा आगलि मूंसालनूं, ए सवि वर्णन साच" (ढाल ३, दूहो १),
"गरजे कहिइं खर पिता" (ढाल ७, दूहो ८)
"छोरू कुछोरू होइ तो पणि, तात अवगुण नवि गणइ (ढाल ७/२)
"इम चित्त म धरे शकट हेटिं, श्वान जिम मनमां धरइ" (७/९)

वांचतां ते ते लोकभाषा–प्रसिद्ध रूढ प्रयोगो अनायासे ध्यानमां आवे छे.
यशोविजयजीनी विलक्षणता ए छे के ज्यां अन्य कविओने पोतानी वात, विधान के



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

પ્રસંગને દૃઢ/પુષ્ટ બનાવવા માટે "ઉક્તં ચ" કે "યદુક્તં"– કહીને નીતિશાસ્ત્રાદિના સાક્ષાત્ શ્લોકો ટાંકવા – ઉધ્ધરવા પડે છે, ત્યાં યશોવિજયજી, તેવું ન કરતાં, ઉપર જોયું તેમ, જે તે નીતિવચન વગેરેને પોતાની શૈલીથી ભાષામાં જ ઢાળી દઈ પોતાના પ્રવાહને અસ્ખલિત ચાલુ રાખે છે.